व्हाइट हाउस
प्रैस सचिव का कार्यालय

तुरंत प्रकाशन के लिये 8 नवम्बर, 2010

भारतीय संसद के संयुक्त अधिवेशन में
राष्ट्रपति का भाषण

संसद भवन
नई दिल्ली, भारत

सायं 5:40. भारतीय समयानुसार

राष्ट्रपति: उप राष्ट्रपति महोदय, लोक सभा अध्यक्ष महोदया, प्रधान मंत्री महोदय, लोकसभा और राज्यसभा के सदस्यों, और सबसे बढ़कर, भारतवासियों.

विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र और सौ करोड़ से भी अधिक भारतीयों के प्रतिनिधियों को संबोधित करने के महा-सम्मान के लिये मैं आप को धन्यवाद देता हूं. (तालियां) मैं विश्व के सबसे पुराने लोकतंत्र -- संयुक्त राज्य अमेरिका की शुभकामनाएं और मैत्री अपने साथ लाया हूं जिनमें लगभग तीस लाख गौरवान्वित और देशभक्त भारतीय-अमरीकी भी शामिल हैं. (तालियां)

पिछले तीन दिनों के दौरान, मेरी पत्नी मिशेल और मैंने भारत और उसकी जनता की गतिशीलता का अनुभव किया है -- हुमायूं के मक़बरे की तेजस्विता से लेकर उन उन्नत प्रौद्योगिकियों तक जो किसानों और महिलाओं को समर्थ बना रहे हैं जो कि भारतीय समाज की रीढ़ की हड्डी हैं; स्कूली बच्चों के साथ दिवाली समारोहों से लेकर उन प्रवर्तकों तक जो भारत के आर्थिक उत्थान में ईंधन डाल रहे हैं; उन विश्वविद्यालय छात्रों से लेकर जो भारत के भविष्य का नक़शा तैयार करेंगे, आप तक -- जो वो नेता हैं जिन्होंने भारत को असाधारण प्रत्याशा के इस क्षण तक लाने में सहायता की है.

हर क़दम पर, हमारा उस मेहमान-नवाज़ी के साथ स्वागत किया गया जिसके लिये भारतवासी हमेशा से विख्यात रहे हैं. इसलिये, आप से और भारत की जनता से मेरा आग्रह है कि मेरी, मिशेल की और अमरीकी जनता की ओर से मेरा हार्दिक आभार स्वीकार करें. (तालियां) बहुत धन्यवाद. (तालियां)

अब, मैं भारत की यात्रा पर आनेवाला पहला अमेरिकी राष्ट्रपति नहीं हूं, और नहीं मैं आख़िरी होऊंगा. लेकिन मुझे गर्व है कि मैं अपने प्रशासन-काल में इतनी जल्दी भारत यात्रा पर आया. यह कोई संयोग की बात नहीं है कि एशिया की यात्रा पर भारत मेरा पहला पड़ाव है, या यह कि राष्ट्रपति बनने के बाद से यह मेरी किसी अन्य देश की सबसे लंबी यात्रा है. (तालियां) क्योंकि एशिया में और विश्व भर में भारत केवल उभरता हुआ देश नहीं है; भारत उभर चुका है. (तालियां)

और मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि अमेरिका और भारत का रिश्ता – जो हमारे साझे हितों और हमारे साझे मूल्यों की डोर से बंधा है -- 21वीं शताब्दी को परिभाषित करनेवाली साझेदारियों में से एक होगा. मैं इसी साझेदारी का निर्माण करने यहां आया हूं. यही वह स्वप्न है जिसे हमारे दोनों देश मिलकर साकार कर सकते हैं.

हमारे साझे भविष्य में मेरे विश्वास की जड़ें, भारत के बहुमूल्य अतीत के प्रति मेरे आदर में जमी हुई हैं -- एक ऐसी सभ्यता जो हज़ारों वर्षों से विश्व को आकार देती आई है. भारतीयों ने मानव शरीर की पेचीदगियों और हमारे ब्रह्मांड की विशालता के रहस्यों का ताला खोला. यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि हमारे सूचना–युग की जड़ें भारतीयों के खोजकार्यों में जमी हुई हैं – जिनमें शून्य की खोज भी शामिल है. (तालियां)

निश्चय ही, भारत ने केवल हमारे दिमागों को ही नहीं खोला, उसने हमारी नैतिक कल्पनाओं का भी विस्तार किया -- ऐसे धार्मिक पाठों के ज़रिये जो आज भी आस्थावानों को मान-मर्यादा और संयम का जीवन जीने के लिये पुकारते हैं, ऐसे कवियों के ज़रिये जिन्होंने ऐसे भविष्य की कल्पना की "जहां मन में कोई डर न हो, और सिर ऊंचा उठा रहे " (तालियां) -- और एक ऐसे व्यक्ति के ज़रिये जिसका प्रेम और न्याय का संदेश आज भी क़ायम है – आपके राष्ट्रपिता महात्मा गांधी. (तालियां)

मेरे और मिशेल के लिये इस यात्रा का, इसलिये, एक विशेष अर्थ रहा है. देखिये, मेरे संपूर्ण जीवन में, जिसमें एक युवा के रूप में शहरी ग़रीबों की लिये मेरा कार्य भी शामिल है, मुझे गांधीजी के जीवन से और उनके इस सीधे सादे और गहन सबक से प्रेरणा मिलती रही है कि हम विश्व में जो परिवर्तन लाना चाहते हैं, स्वयं वे बनें. (तालियां). और जैसे उन्होंने भारतवासियों को अपना भाग्य स्वयं खोजने के लिए पुकारा, उसी तरह उन्होंने मेरे अपने देश में समानता के ध्वज-वाहकों को प्रभावित किया, जिनमें एक युवा धर्मोपदेशक भी शामिल था जिसका नाम था मार्टिन लूथर किंग. आधी शताब्दी पूर्व भारत की अपनी तीर्थ-यात्रा के बाद, डॉक्टर किंग ने गांधीजी के अहिंसक विरोध को न्याय और प्रगति के संघर्ष में "एकमात्र तर्कसंगत और नैतिक मार्ग" बताया. (तालियां)

इसलिये हमने उस निवास की यात्रा करके स्वयं को सम्मानित महसूस किया जहां गांधी और किंग दोनों ठहरे थे – मणिभवन. और राजघाट पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करके हमें दीनता का अनुभव हुआ. और मैं जानता हूं कि शायद आज मैं, अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में, आपके सामने ख़ड़ा न होता, यदि गांधी जी और उनका वह संदेश न होता, जो उन्होंने बांटा और जिसने अमेरिका और विश्व को प्रेरित किया. (तालियां)

विज्ञान और नवाचार की एक प्राचीन संस्कृति; मानव प्रगति में एक मूलभूत विश्वास –- यह है वह मज़बूत बुनियाद जिस पर आपने अर्धरात्रि का घंटा बजने के उस क्षण से निरंतर निर्माण किया है जब एक स्वतंत्र और स्वाधीन भारत पर तिरंगा लहराया था. (तालियां). और उन संदेहवादियों के बावजूद जिनका कहना था कि यह देश इतना ग़रीब है, या इतना विशाल है, या इतना विविधतापूर्ण है कि यह सफल हो ही नहीं सकता, आपने दुर्दमनीय विषमताओं पर विजय प्राप्त की और विश्व के लिये एक आदर्श बन गये.

भूखमरी के गर्त में घंसने की बजाय, आपने हरित क्रांति आरंभ की जिसने लाखों का पेट भरा. पदार्थों और निर्यातों पर निर्भर बनने की बजाय, आपने विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में पूंजी लगायी, और लगायी उसमें जो

आपका सबसे बड़ा संसाधन है -- भारत के लोग. और उसका परिणाम दुनिया देख रही है, आपने जो सुपर-कम्प्यूटर बनाये उनसे लेकर भारत के उस झंडे तक जो आपने चांद की सतह पर लगा दिया.

वैश्विक अर्थव्यवस्था का प्रतिरोध करने के बजाय, आप उसका एक इंजन बन गये -- लाइसेंस राज में सुधार करके ऐसे आर्थिक चमत्कार को बेड़ी-मुक्त किया जिसने लाखों लोगों को ग़रीबी से उबारा है और विश्व के सबसे बड़े मध्यम-वर्ग का निर्माण किया है.

विभाजन के आगे घुटने टेकने की बजाय, आपने दिखा दिया है कि भारत की शक्ति -- भारत का मूल विचार ही -- है सभी रंगों, सभी जातियों, सभी धर्मों का आलिंगन, उन्हें अपनाना. (तालियां). वह विविधता जिसका आज इस सभाकक्ष में प्रतिनिधित्व हो रहा है. आस्थाओं की वह समृद्धि जिसका एक शताब्दी से भी अधिक समय पूर्व मेरे निवास-नगर शिकागो आनेवाले एक यात्री ने अनुष्ठान किया था -- विख्यात स्वामी विवेकानंद. उन्होंने कहा था कि "पवित्रता, शुद्धता, और दानशीलता विश्व में किसी भी चर्च की एकांतिक मिल्कियत नहीं है, और कि हर दर्शन-शास्त्र ने सर्वाधिक उदात्त चरित्र वाले स्त्री-पुरुष पैदा किये हैं."

और इस मिथ्या धारणा की ओर आकर्षित होने की बजाय कि प्रगति स्वतंत्रता की क़ीमत पर ही प्राप्त हो सकती है, आपने उन संस्थाओं का निर्माण किया जिन पर सच्चा लोकतंत्र निर्भर करता है -- स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव जो नागरिकों को हथियारों का सहारा लिए बगैर अपने नेता आप चुनने का अवसर देता है -- (तालियां) -- एक स्वाधीन न्यायपालिका और क़ानून का शासन, जो लोगों को अपनी शिकायतों का समाधान पाने का मौका देता है; और एक फलता-फूलता स्वतंत्र प्रेस तथा एक सजीव सभ्य समाज जो यह मौका देता है कि हर आवाज़ सुनी जाए. इस वर्ष, जब भारत एक सशक्त और लोकतांत्रिक संविधान वाले देश के रूप में 60 वर्ष पूरे कर चुका है, तो यह सबक़ स्पष्ट है: भारत सफल हुआ है, लोकतंत्र के बावजूद नहीं; भारत सफल हुआ है लोकतंत्र की वजह से. (तालियां)

अब, जैसे भारत परिवर्तित हुआ है, उसी तरह हमारे दोनों देशों के संबंध भी परिवर्तित हुए हैं. स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद वाले दशकों में भारत ने गुट-निरपेक्ष आंदोलन के गर्वीले नेता के रूप में अपने हितों को आगे बढ़ाया. लेकिन, अक्सर, लंबे शीत-युद्ध के कारण एक-दूसरे से विमुख संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत ने स्वयं को उत्तर- दक्षिण खाई के परस्पर विरोधी पक्षों में पाया. लेकिन वे दिन अब बीत चुके हैं.

यहां भारत में अलग-अलग पार्टियों के नेतृत्व वाली, एक-दूसरे के बाद आनेवाली दो सरकारों ने यह पहचाना कि अमेरिका के साथ अधिक गहन साझेदारी स्वाभाविक भी है और ज़रूरी भी. और संयुक्त राज्य अमेरिका में मेरे दोनों पूर्व-वर्तियों ने -- जिनमें एक डेमोक्रेट था, और एक रिपब्लिकन -- हम दोनों को और निकट लाने के लिए कार्य किया, जिसके परिणाम में व्यापार बढ़ा और एक ऐतिहासिक नागरिक-परमाणु-समझौता संपन्न हुआ. (तालियां)

लिहाज़ा उस समय से हमारे दोनों देशों में लोग पूछते रहें: अब आगे क्या? इस प्रगति के आधार पर हम आगे कैसे और निर्माण कर सकते हैं और अपनी साझेदारी की पूर्ण संभावनाओं को हासिल कर सकते हैं? आज मैं इसी पर ध्यान केन्द्रित करना चाहता हूं -- परस्पर जुड़े हुए विश्व में अमेरिका किस भविष्य की खोज में है, और मेरा क्यों यह विश्वास है कि इस स्वप्न के लिए भारत अपरिहार्य है; हम सच्चे अर्थों में एक वैश्विक

साझेदारी कैसे निर्मित कर सकते हैं -- मात्र एक या दो क्षेत्रों में नहीं, बल्कि अनेक क्षेत्रों में साझेदारी; केवल अपने पारस्परिक लाभ के लिए नहीं, बल्कि विश्व भारत के लाभ के लिए.

निश्चय ही, भारत के राष्ट्रीय हितों को और विश्व के मंच पर उन्हें कैसे आगे बढ़ाया जाए इसे केवल भारतवासी ही निर्धारित कर सकते हैं. लेकिन मैं आज आप के सामने ख़ड़ा हूं क्योंकि मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि अमेरिका के हितों – और जिन्हें हम भारत के साथ शेयर करते हैं उन हितों -- का सर्वोत्तम संवर्धन साझेदारी में ही हो सकता है. मेरा यह विश्वास है. (तालियां)

अमेरिका सुरक्षा चाहता है -- हमारे देश की सुरक्षा, हमारे मित्रों और साझेदारों की सुरक्षा. हम खुशहाली चाहते हैं -- एक खुली अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रणाली में एक सशक्त और बढ़ती अर्थ व्यवस्था. हम सार्वभौम मूल्यों के प्रति समादर चाहते हैं. और हम एक ऐसी न्यायपूर्ण और जीवनक्षम अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था चाहते हैं जो वैश्विक चुनौतियों का अधिक सशक्त वैश्विक सहयोग के ज़रिये सामना करके शांति और सुरक्षा को बढ़ावा दे.

अब, इन हितों को बढ़ावा देने के लिए, मैंने अमेरिका को विश्व के साथ पारस्परिक हित और पारस्परिक सम्मान के आधार पर व्यापक रूप से मिलकर काम करने के प्रति वचनबद्ध किया है. और इस तरह मिलकर काम करने का एक केन्द्रीय स्तम्भ है - 21वीं शताब्दी के प्रभाव के केन्द्रों के साथ अधिक गहरा सहयोग स्थापित करना -- और इनमें आवश्यक रूप में भारत को शामिल किया जाना होगा.

अब, भारत विश्व की अकेली उभरती हुई शक्ति नहीं है. लेकिन हमारे देशों के बीच के सम्बन्ध अनूठे हैं. क्योंकि हम दो सशक्त लोकतंत्र हैं जिनके संविधान एक जैसे क्रांतिकारी शब्दों से शुरू होते हैं -- समान क्रांतिकारी शब्दों से -- "हम इस देश के लोग". हम दो महान गणतंत्र हैं जो सभी लोगों के लिये स्वतंत्रता और न्याय और समानता को समर्पित हैं. और हम दो मुक्त मंडी अर्थ व्यवस्थाएं हैं जहां लोग ऐसे विचारों और नवाचारों पर कार्य करने के लिए स्वतंत्र है जो विश्व को बदल सकते हैं. और इसी कारण मेरा विश्वास है कि भारत और अमेरिका हमारे समय की चुनौतियोंका सामना करने के लिए अपरिहार्य साझेदार हैं. (तालियां).

जब से मैंने पदभार संभाला है, इसी कारण, तभी से मैंने अपने संबंधों को एक प्राथमिकता बनाया है. अपने राष्ट्रपति-काल की प्रथम सरकारी राजकीय यात्रा पर प्रधानमंत्री सिंह का स्वागत करके मैंने गर्व का अनुभव किया. (तालियां). यह बिल्कुल पहली बार है कि हमारी सरकारें उन समान चुनौतियों की संपूर्ण शृंखला पर मिलकर काम कर रही है, जो हमारे सामने हैं. अब, मैं जितना स्पष्त रूप से कह सकता हूं, यह कहना चाहता हूं: संयुक्त राज्य अमेरिका एक उभरती वैश्विअक शक्ति के रूप में भारत का न केवल स्वागत करता है, बल्कि हम जोश के साथ उसका समर्थन करते हैं, और इसे एक वास्तविकता बनाने में सहायता देने के लिए हमने काम किया है.

अपने साझेदारों के साथ हमने G-20 को अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग का एक प्रधान मंच बनाया है, वैश्विक आर्थिक निर्णय लेने में और आवाज़ों को मेज़ पर लाये हैं, और इनमें भारत शामिल रहा है. हमने अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों में भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं की भूमिका को बढ़ाया है. कोपनहागन में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका की हमने कद्र की है जहां, पहली बार, सभी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं ने जलवायु परिवर्तन का मुक़ाबला करने के लिये क़दम उठाने का वचन लिया -- और उन कार्यों के साथ ख़ड़े रहने का प्रण किया. हम

संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति बनाये रखने के मिशनों में एक प्रमुख योगदान-कर्ता के रूप में भारत के लंबे इतिहास को सलाम करते हैं. और हम भारत का स्वागत करते हैं जबकि वह राष्ट्र संघ सुरक्षा परिषद में अपना स्थान ग्रहण करने की तैयारी कर रहा है. (तालियां)

संक्षेप में, जबकि भारत विश्व में अपना न्यायोचित स्थान ग्रहण कर रहा है, हमारे लिए अपने दोनों देशों के बीच संबंधो को आनेवाली शताब्दी को परिभाषित करने वाली साझेदारी बनाने का ऐतिहासिक अवसर मौजूद है. और मेरा विश्वास है कि हम तीन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में साथ-साथ काम करके ऐसा कर सकते हैं.

प्रथम, वैश्विक साझेदारों के रूप में हम दोनों देशों में खुशहाली को बढ़ावा दे सकते हैं. मिलकर, हम भविष्य की उच्च-प्रौद्योगिकी, उच्च-वेतन वाली नौकरियां निर्मित कर सकते हैं. अपनी इस यात्रा के साथ, अब हम अपने नागरिक परमाणु समझौते को अमल में लाना शुरू करने के लिए तैयार हैं. इससे भारत की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद मिलेगी और हमारे दोनों देशों में हज़ारों रोज़गार पैदा होंगे. (तालियां).

हमें रक्षा और नागरिक अंतरिक्ष क्षेत्रों जैसे उच्च-प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में साझेदारियां निर्मित करनी चाहियें. इसलिये हमें भारतीय संगठनों का नाम अपनी तथा कथित "इकाई सूची" से हटा दिया है. और हम निर्यातों पर से अपने नियंत्रणों को हटाने -- और सुधारने के लिए कार्य करेंगे. इन दोनों क़दमों से यह सुनिश्चित होगा कि अमेरिका से उच्च- प्रौद्योगिकी व्यापार तथा प्रौद्योगिकियां चाहने वाली भारतीय कम्पनियों के साथ वैसा ही व्यवहार किया जायेगा जैसा हमारे निकटतम मित्रों और साझेदारों के साथ किया जाता है. (तालियां).

हम संयुक्त अनुसंधान और विकास को आगे बढ़ा सकते हैं ताकि हरित रोज़गार पैदा हों; भारत को अधिक स्वच्छ और वहन-योग्य ऊर्जा तक अधिक पहुंच हासिल हो; कोपनहागन में दिए गए अपने वचनों को हम पूरा कर सकें; और निम्न-कार्बन विकास की सम्भावनाओं को प्रदर्शित कर सकें.

और मिलकर, हम संरक्षणवाद का प्रतिरोध कर सकें जो विकास और नवाचार का दम घोंटता है. संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व की सबसे ज़्यादा खुली अर्थव्यवस्थाओं में से एक है -- और वैसा ही बना रहेगा. और मंडियों को खोल कर तथा विदेशी पूंजी निवेश की राह की बाधाओं को कम करके, भारत भी अपनी पूर्ण आर्थिक सम्भावनाओं को प्राप्त कर सकता है. G-20 के साझेदारों के रूप में, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि वैश्विक आर्थिक पुनरुत्थान सशक्त और टिकाऊ हो. और हम ऐसे दोहा दौर के लिए प्रयास जारी ररख सकते हैं जो महत्वाकांक्षी हो और संतुलित हो – ऐसे समझौते करने का साहस दिखा कर जो ऐसे विश्वव्यापी व्यापार के लिए ज़रूरी हैं जो सभी अर्थव्यवस्थाओं के लिए कारगर हो.

मिलकर, हम कृषि को मज़बूत बना सकते हैं. भारतीय और अमेरिकी अनुसंधानकर्ताओं तथा वैज्ञानिकों के बीच सहयोग ने हरित क्रांति की मशाल जलायी थी. आज, भारत ऐसी प्रौद्योगिकी के उपयोग में अग्रणी है जो किसानों को सक्षम बनाती है, जिस तरह के किसानों से मैं कल मिला था जिन्हें मंडी और मौसम के बारे में ताज़ा सूचना अपने सैल फ़ोनों पर मुफ़्त प्राप्त होती है. और अमेरिका, कृषि उत्पादकता और अनुसंधान में अग्रणी है. अब जबकि किसानों और ग्राम्य क्षेत्रों को जलवायु परिवर्तन तथा सूखे का सामना है, हम दूसरी, अधिक सतत, सदाबहार हरित क्रांति में प्राण फूंक सकते हैं.

मिलकर, हम अगली मौनसून ऋतु से पहले भारत की मौसम पूर्वानुमान प्रणालियों में सुधार ला रहे हैं. हमारा लक्ष्य है लाखों भारतीय कृषकों -- किसान परिवारों की मदद करना ताकि वे पानी की बचत कर सकें और उत्पादकता बढ़ा सकें, खाद्य पदार्थों के प्रसाधन में सुधर हो ताकि मंदी जाते हुए मार्ग में फसलें सड़ ना जाएँ, तथा जलवायु और फ़सल पूर्वानुमानों में सुधार हो ताकि हानियों से बचा जा सके जो समुदायों को अपंग बना देती हैं और खाद्य पदार्थों की क़ीमतें बढ़ा देती हैं.

और अपनी खाद्य सुरक्षा पहल के अंग के तौर पर, हम भारत की विशेषज्ञता अफ़्रीका में किसानों के साथ बाटेंगे. और यह भारत के उत्थान का एक संकेत है – कि अब हम मेहनत से अर्जित विशेषज्ञता को उन देशों को निर्यात कर सकते हैं जो भारत को कृषि विकास के लिए एक नमूना मानते हैं. यह इसका एक और सशक्त उदाहरण है कि कैसे भारतीय और अमरीकी साझेदारी एक तात्कालिक विश्वव्यापी चुनौति से निपट सकती है.

क्योंकि किसी देश की संपन्नता उसके लोगों के स्वास्थ्य पर भी निर्भर करती है, हम तपेदिक और एचआईवी/ एड्स जैसे रोगों के ख़िलाफ़ भारत के प्रयास को समर्थन देना जारी रखेंगे, और वैश्विक साझेदारों के नाते देशांतरगामी फ्लू के प्रसार को रोकने के प्रयास करके वैश्विक स्वास्थ्य में सुधार के लिए कार्य करेंगे. और क्योंकि ज्ञान 21वीं शताब्दी की मुद्रा है, हम अपने छात्रों, अपने कोलेजों और अपने विश्वविद्यालयों के बीच आदान-प्रदानों को बढ़ायेंगे, जो कि विश्व के सर्वोत्तमों में गिने जाते हैं.

जबकि हम अपनी साझी खुशहाली के संवर्धन के लिये कार्य करेंगे, हम एक दूसरी प्राथमिकता की दिशा में भी साझेदार बन सकते हैं -- और वह है हमारी साझी सुरक्षा. मुम्बई में, मैं साहसी परिवारों और उस बर्बर हमले से जीवित बचे लोगों से मिला. और यहां संसद में, जिसे स्वयं निशाना बनाया गया क्योंकि यह लोकतंत्र का प्रतिनिधित्व करती है, हम उन सबकी स्मृति को श्रद्धांजलि देते हैं जो हमसे छीन लिये गये, जिनमें 26/11 को मारे गये अमेरिकी नागरिक और 9/11 को मारे गये भारतीय नागरिक शामिल हैं.

यह है वह बंधन जो हम शेयर करते हैं. इसी कारण हमारा यह आग्रह है कि निर्दोष स्त्री, पुरुष और बच्चों की हत्या को कभी भी, कुछ भी, उचित नहीं ठहरा सकता. यही कारण है कि हम आतंकवादी हमले रोकने के लिए किसी भी समय के मुक़ाबले, अधिक निकटता से मिलकर काम कर रहे हैं और अपने सहयोग को और ज़्यादा गहन बना रहे हैं. और यही कारण है, कि सशक्त और हर मुश्किल से उबर आने वाले समाजों के नाते, हम भय में जीना अस्वीकार करते हैं. हम उन मूल्यों और क़ानून के शासन की बलि नहीं चढ़ायेंगे जो हमें परिभाषित करते हैं, और हम अपनी जनता की हिफ़ाज़त में कभी नहीं डगमगायेंगे.

अल-क़ायदा और उसके आतंकवादी साथियों के विरुद्ध अमेरिका की लड़ाई ही वह कारण है कि हम अफ़ग़ानिस्तान में दृढ़ प्रतिज्ञ बनकर ख़ड़े हुए है, जहां भारत की प्रमुख विकास सहायता ने अफ़ग़ान लोगों का जीवन सुधारा है. हम तालिबान की गतिमयता को तोड़ने और अफ़ग़ान सेनाओं को प्रशिक्षित करने के अपने मिशन में प्रगति कर रहे हैं ताकि वे अपनी सुरक्षा की स्वयं अगुआई कर सकें. और जबकि मैंने यह स्पष्ट कर दिया है कि अमेरिकी सेनाएं अगली गर्मियों में अफ़ग़ान लोगों को ज़िम्मेदारी सौंपना शुरू कर देंगी, मैंने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि अफ़ग़ान लोगों के प्रति अमेरिका की वचनबद्धता बरक़रार रहेगी. संयुक्त राज्य अमेरिका अफ़ग़ानिस्तान के लोगों का -- या उस क्षेत्र का – उन हिंसक अतिवादियों के लिए परित्याग नहीं करेगा जो हम सबके लिये ख़तरा पेश करते हैं.

अल-क़ायदा और उसके सहभागियों को विघटित, विखंडित और परास्त करने की हमारी रणनीति को सीमा के दोनों ओर सफल होना होगा. और यही कारण है कि हमने सीमा-क्षेत्र में आतंकवादी ताने-बानों के ख़तरे से निपटने के लिए पाकिस्तानी सरकार के साथ मिलकर कार्य किया है. पाकिस्तानी सरकार अधिकाधिक यह समझती जा रही है कि ये ताने-बाने केवल पाकिस्तान के बाहर ही ख़तरा नहीं हैं -- वे पाकिस्तानी लोगों के लिए भी एक ख़तरा हैं. पिछले कई वर्षों के दौरान उन्होंने हिंसक चरमपंथियों के हाथों बहुत कुछ झेला है.

और हम पाकिस्तानी के नेताओं से यह आग्रह करना जारी रखेंगे कि उनकी सीमाओं के भीतर आतंकवादियों के सुरक्षित शरण–स्थल स्वीकार्य नहीं हैं, और कि मुम्बई हमलों के पीछे जो आतंकवादी थे उन्हें न्याय के कटघरे में ख़डा किया ही जाना होगा. (तालियां). हमें यह भी समझना होगा कि हम सब का हित एक ऐसे अफ़गानिस्तान और एक ऐसे पाकिस्तान दोनों में है जो स्थिर, खुशहाल और लोकतांत्रिक हो -- और इसमें भारत का भी हित है.

क्षेत्रीय सुरक्षा की खोज में हम भारत और पाकिस्तान के बीच वार्तालाप का स्वागत करना जारी रखेंगे, जबकि हम यह स्वीकार करते हैं कि आपके दोनों देशों के झगड़े आप दोनों देशों की जनता द्वारा ही सुलझाये जा सकते हैं.

अधिक व्यापकता से देखें, तो भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका एशिया में साझेदार बन सकते हैं. आज, अमेरिका एशिया में एक बार फिर नेतृत्व की भूमिका निभा रहा है -- पुरानी मैत्रियों को मज़बूत बनाकर; रिश्तों को और गहन बनाकर, जैसा कि हम चीन के साथ कर रहे हैं; और हम एसियान जैसे क्षेत्रीय संगठनों के साथ फिर संपर्क-सूत्र पिरो रहे हैं और पूर्व एशिया शिखर संगठन में शामिल हो रहे हैं – वे संगठन जिनमें भारत भी एक साझेदार है. दक्षिण-पूर्व एशिया में आप के पड़ोसियों की तरह, हम केवल यही नहीं चाहते कि भारत " पूर्व की ओर देखे" बल्कि हम चाहते हैं कि भारत "पूर्व के साथ संपर्क सूत्र बनाये" -- क्यों कि इससे हम सभी राष्ट्रों की सुरक्षा और खुशहाली बढ़ेगी.

दो वैश्विक नेताओं के रूप में अमेरिका और भारत विश्व-व्यापी सुरक्षा के लिए साझेदार बन सकते हैं -- विशेष कर अगले दो वर्षों में जबकि भारत सुरक्षा परिषद के सदस्य के रूप में कार्य करेगा. वास्तव में, अमेरिका जो न्यायपूर्ण और जीवनक्षम अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था चाहता है उसमें एक ऐसा संयुक्त राष्ट्र संघ शामिल है जो कार्यकुशल, प्रभावी, विश्वसनीय और वैध हो. यही कारण है कि आज मैं कह सकता हूं, कि आनेवाले वर्षों में, मैं उत्सुकता से एक सुधरी हुई राष्ट्र संघ सुरक्षा परिषद की प्रतीक्षा कर रहा हूं जिस में भारत एक स्थायी सदस्य के रूप में शामिल हो. (तालियां)

अब, मैं यह कहना चाहता हूं कि ताक़त बढ़ने के साथ-साथ ज़िम्मेदारी भी बढ़ती है. संयुक्त राष्ट्र संघ का अस्तित्व इसलिये है कि वह अपने स्थापना आदर्शों को पूरा करे, जो हैं शांति और सुरक्षा बनाये रखना, वैश्विक सहयोग को प्रोत्साहन देना, और मानवाधिकारों को बढ़ावा देना. ये सभी देशों के दायित्व हैं, लेकिन विशेषरूप से उनके जो 21 वीं शताब्दी में नेतृत्व करना चाहते हैं. और इसलिए हम भारत के साथ –– और उन अन्य देशों के साथ जो सुरक्षा परिषद की सदस्यता की आकांक्षा रखते हैं -- यह सुनिश्चित करने के लिये काम करने की बाट जोह रहे हैं कि सुरक्षा परिषद प्रभावी हो; उसके प्रस्तावों पर अमल किया जाय, कि निषेधों का

पालन कराया जाय; कि हम उन अंतर्राष्ट्रीय सामान्य नियमों को मज़बूत बनायें जो सभी राष्ट्रों और सभी व्यक्तियों के अधिकारों तथा दायित्वों को मान्यता देते हैं.

इसमें परमाणु अस्त्रों का प्रसार रोकने का हमारा दायित्व भी शामिल है. जबसे मैंने पदभार संभाला है, अमेरिका ने हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति में परमाणु अस्त्रों की भूमिका को घटा दिया है, और हम अपने अस्त्र भंडारों को घटाने के लिए रूस के साथ सहमत हुए हैं. हमने परमाणु अस्त्र प्रसार और परमाणु आतंकवाद को रोकना, अपनी परमाणु कार्यावली में सबसे ऊपर रखा है, और हमने विश्व-व्यापी अप्रसार प्रणाली की आधारशीला को मज़बूत बनाया है जो है परमाणु अप्रसार संधि.

मिलकर, अमेरिका और भारत विश्व की भेद्य परमाणु सामग्रियों को सुरक्षित करने के अपने ल्क्ष्य की प्राप्ति के लिए कार्य कर सकते हैं. हम यह स्पष्ट कर सकते हैं कि हर देश को जहां शांतिपूर्ण परमाणु ऊर्जा प्राप्ति का अधिकार है, वहीं हर देश के लिए अपने अंतर्राष्ट्रीय दायित्वों को पूरा करना भी ज़रूरी है -- और इसमें इस्लामी गणराज्य ईरान भी शामिल है. और मिलकर, हम उस स्वप्न को साकार करने के लिए भी काम कर सकते हैं जो भारत के नेताओं की स्वाधीनता-प्राप्ति के समय से ही चाह रहा है – ऐसा विश्व जिसमें परमाणु अस्त्र न हों. (तालियां).

और यह मुझे उस अंतिम क्षेत्र की ओर ले जाता है जहां हमारे दोनों देश साझेदारी कर सकते हैं –– लोकतांत्रिक शासन की नीवों को मज़बूत बनाना, देश में ही नहीं विदेश में भी.

अमेरिका में, मेरे प्रशासन ने सरकार को और खुला और पारदर्शी तथा जनता के प्रति और जवाबदेह बनाने के लिए कार्य किया है. यहां भारत में आप भी ऐसा ही करने के लिए प्रौद्योगिकियों का सहारा ले रहे हैं, जैसाकि मैंने कल मुम्बई में एक प्रदर्शनी में देखा. आपका ऐतिहासिक सूचना अधिकार क़ानून नागरिकों को सक्षम बना रहा है, यह क्षमता देकर कि वे जिन सेवाओं के अधिकारी हैं उन्हें प्राप्त कर सकें -- (तालियां) -- और अधिकारियों को उत्तरदायी ठहरा सकें. मतदाता लिखित बेतार संदेश के ज़रिये उम्मीदवारों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं. और आप ग्रामीण समुदायों को शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा पहुंचा रहे हैं, जैसाकि मैंने कल उस समय देखा जब मैं राजस्थान में ग्रामवासियों के साथ ई- पंचायत में जुड़ा.

अब, खुली सरकार के बारे में एक नई सहभागिता में हमारे दोनों देश अपने अनुभव एक-दूसरे के साथ बाटेंगे, यह देखेंगे कि क्या कारगर होता है, और नागरिकों को सक्षम बनाने के अगली पीढ़ी के उपकरण विकसित करेंगे. और भारत-अमेरिकी साझेदारी कैसे वैश्विक चुनौतियों से निपट सकती है इसके एक और उदाहरण के रूप में, हम इन नवाचारों को सभ्य समाज दलों और विश्व भर के देशों के साथ साझा करेंगे. हम यह दिखा देंगे कि सरकार की किसी भी अन्य प्रणाली से अधिक लोकतंत्र आम आदमी -- और औरत के लिए परिणाम प्रदान करता है.

इसी तरह, जब भारतीय वोट डालते हैं तो सारा संसार देखता है. हज़ारों राजनीतिक पार्टियां, लाखों मतदान केंद्र, दसियों लाख उम्मीदवार और मतदान कर्मिक -- और 70 करोड़ मतदाता. इस गृह पर इस तरह का और कुछ भी नहीं है. इतना कुछ है जो लोकतंत्र की ओर संक्रमण कर रहे देश भारत के अनुभव से सीख

सकते हैं, इतनी अधिक विशेषज्ञता जो भारत विश्व के साथ साझ कर सकता है. और यह भी ऐसा है जो तब संभव है जब विश्व का सबसे विशाल लोकतंत्र वैश्विक नेता के रूप में अपनी भूमिका को गले लगाये.

विश्व के सबसे दो बड़े लोकतंत्रों के रूप में हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि हमारी अपनी स्वतंत्रता की क़ीमत यह है कि हम दूसरों की स्वतंत्रता के लिए ख़ड़े हों. (तालियां) भारतीय इसे जानते हैं, क्योंकि यह आपके देश की कहानी है. भारत की स्वाधीनता के लिए संघर्ष शुरू करने से कहीं पहले गांधी, दक्षिण अफ़्रीका में भारतीयों के अधिकारों के लिए ख़ड़े हुए. वैसे ही जैसे संयुक्त राज्य अमेरिकी सहित औरों ने भारत की स्वाधीनता को समर्थन दिया, भारत अफ़्रीका से ले कर एशिया तक लोगों के आत्म-निर्णय का हिमायती बना जबकि वे भी साम्राज्यवाद से मुक्त हुए. (तालियां) और अमेरिका के साथ- साथ, आप भी विश्व भर में लोकतांत्रिक विकास और सभ्य समाज दलों का समर्थन करने वालों में अग्रणी रहे हैं. और यह भी भारत की महानता का एक अंग है.

अब, हम सब यह समझते हैं कि हर देश स्वयं अपने ही मर्ग पर चलेगा. किसी भी देश का बुद्धिमानी पर एकाधिकार नहीं है, और किसी भी देश को कभी भी अपने मूल्य किसी और पर थोपने की कोशिश नहीं करनी चाहिये. लेकिन जब शांतिपूर्ण लोकतांत्रिक आंदोलनों को कुचला जाये -- जैसे कि मिसाल के तौर पर बर्मा में किया गया है -- तब विश्व के लोकतंत्र खामोश नहीं रह सकते. क्योंकि यह स्वीकार्य नहीं है कि शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन करने वालों को गोलियों से भून दिया जाय और राजनीतिक बन्दियों को दशकों दशकों तक क़ैदख़ानों में रखा जाय. यह अस्वीकार्य है कि एक सम्पूर्ण जनता की महत्वाकांक्षाओं को दिवालिये प्रशासकों के लालच और अति-अविवेकी संदेहशीलता का बंधक बनाकर रखा जाय. यह अस्वीकार्य है कि चुनाव चुरा लिये जाएं, जैसा कि बर्मा में प्रशासन ने एक बार फिर किया है जिसे सारी दुनिया देख सकती है.

मानवाधिकारों के ऐसे घोर उल्लंघनों का सामना होने पर , अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की -- विशेषकर अमेरिका और भारत जैसे नेताओं की -- यह ज़िम्मेदारी है कि इसकी भर्त्सना की जाए. और यदि मैं साफ़ साफ़ कहूं, तो अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत ऐसे कुछ मसलों के बारे में अक्सर संकोची रहा है. लेकिन उन लोगों की ओर से बोलना जो स्वयं अपने लिए ऐसा नहीं कर सकते, अन्य देशों के मामले में हस्तक्षेप करना नहीं है. यह प्रभुसत्ता-संपन्न देशों के अधिकारों का अतिक्रमण नहीं है. यह अपने लोकतांत्रिक सिद्धांतों के प्रति सत्यनिष्ठ रहना है. यह उन मानवाधिकारों को सार्थक बनाना है, जिनके बारे में हम कहते हैं कि वे सार्वभौम है. और यह उस प्रगति को संपोषित करता है जिसने एशिया में और विश्व भर में तानाशाहियों को लोकतंत्र में बदलने में सहायता की है और अंतत: विश्व में हमारी सुरक्षा को बढ़ाया है.

तो साझी खुशहाली को प्रोत्साहन देना, शांति और सुरक्षा को बनाये रखना, लोकतांत्रिक शासन और मानवाधिकारों को मज़बूत बनाना -- यह नेतृत्व की ज़िम्मेदारियां हैं. और वैश्विक साझेदारों की रूप में, यह है वह नेतृत्व जो अमेरिका और भारत 21 वीं शताब्दी में प्रस्तुत कर सकते हैं. लेकिन अंतत: यह रिश्ता राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों के बीच का, या इस संसद के गलियारों में सिमटा हुआ नहीं हो सकता. अंतत: यह साझेदारी हमारे देशों की जनता के बीच होनी होगी. (तालियां). इसलिये मैं सीधे भारत के उन लोगों को सम्बोधित करके समापन करना चाहता हूं जो आज हमें देख रहे हैं.

अपने जीवनों में, आपने उन विषमताओं पर विजय पायी है जिन्होंने किसी कम महान देश को अभिभूत कर दिया होता. केवल कुछ दशकों में, आपने वह प्रगति और विकास हासिल किया जिसे पाने में अन्य देशों को

शताब्दियां लग गयीं. अब आप देशों के बीच एक नेता का अपना न्याय-संगत स्थान ग्रहण कर रहे हैं. आपके माता-पिता और दादा-नाना ने इसकी कल्पना की थी. आपके बच्चे और पोते-पोतियां पीछे मुड़कर इसे देखेंगे. लेकिन भारतवासियों की केवल यही पीढ़ी है जो इस क्षण की संभावनाओं का लाभ उठा सकती है.

जबकि आप सामने पड़े इस कठिन कार्य को अंजाम देने के लिए प्रयास करें, तो मैं चाहता हूं कि हर भारतवासी यह जान ले: संयुक्त राज्य अमेरिका दर्शक-दीर्घा से जय जयकार करके केवल आपको प्रोत्साहन ही नहीं दे रहा होगा, हम मैदान में आपके साथ ख़ड़े होंगे, कंधे से कंधा मिलाकर. (तालियां). क्योंकि भारत जिस आशा का प्रतीक है हमें उसमें विश्वास है. हमें विश्वास है कि भविष्य वही होगा जिसका हम निर्माण करेंगे. हमारा विश्वास है कि चाहे आप कोई भी हों, कहीं से भी आये हों, हर व्यक्ति अपनी ईश्वर-प्रदत्त संभावनाओं को साकार कर सकता है, बिलकुल वैसे ही जैसे एक दलित डॉक्टर अम्बेदकर ने स्वयं को ऊपर उठा कर उस संविधान के शब्द रचे जो सभी भारतवासियों के अधिकारों की हिफ़ाज़त करता है. (तालियां)

हमारा विश्वास है कि चाहे आप कहीं भी रहते हों –– पंजाब के किसी गांव में या चांदनी चौक की किसी पतली गली में (हंसी) –– कोलकोता के किसी पुराने इलाके में या बैंगलोर की नई ऊंची इमारत में -- हर व्यक्ति को सुरक्षा और सम्मान के साथ जीने का, शिक्षा प्राप्त करने का, रोज़गार खोजने का, अपने बच्चों को एक बेहतर भविष्य देने का समान अवसर प्राप्त होना चाहिये.

और हमारा विश्वास है कि जब देश और संस्कृतियां उन पुरानी आदतों और रवैयों को दरकिनार कर देती हैं जो लोगों को एक-दूसरे से दूर रखते हैं, जब हम अपनी साझी मानवता को पहचानते हैं, तब हम इन साझी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करना शुरू कर सकते हैं. यह एक सीधा-सा पाठ है जो कहानियों के उस संग्रह में निहित है जो शताब्दियों से भारतवासियों का मार्ग दर्शन करता रहा है -पंचतंत्र. और यह उस शिलालेख का सार है जिसे इस महान सभा-भवन में प्रवेश करने वाला हर व्यक्ति देखता है: "एक मेरा है और दूसरा पराया, यह छोटे दिमागों की विचारधारा है. लेकिन बड़े हृदय वालों के लिये सारा संसार उनका परिवार है."

यह भारत की कहानी है ; यही अमेरिका की कहानी है -- कि अपनी भिन्नताओं के बावजूद, लोग एक दूसरे में स्वयं को देख सकते हैं, साथ- साथ काम कर सकते हैं, और एक गर्वीले राष्ट्र के रूप में साथ-साथ सफलता प्राप्त कर सकते हैं. और यही हमार देशों के बीच साझेदारी की भावना हो सकती है -- कि जबकि हम उन इतिहासों का सम्मान करें जिन्होंने भिन्न समय में हमें अलग-अलग रखा, जबकि हम उसे भी संजो कर रखें जो एक वैश्वीकृत संसार में हमें अनूठा बनाता है, हम फिर भी यह पहचान सकते हैं कि एकजुट हो कर हम कितना कुछ हासिल कर सकते हैं.

और अगर हम इस सीधी-सादी विचारधारा को अपना मार्गदर्शक बनने दें, यदि हम उस स्वप्न पर कार्य करें जो मैंने आज बयान किया -- वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए एक वैश्विक साझेदारी -- तो मुझे कोई संदेह नहीं कि आनेवाली पीढ़ियां –– भारतीयों की और अमेरिकियों की -- एक ऐसे विश्व में जियेंगी जो अधिक खुशहाल, अधिक सुरक्षित और अधिक न्यायपूर्ण होगा, रिश्तों के उन बंधनों के कारण जो हमारी पीढ़ी ने आज गढ़े हैं .

तो, आपका धन्यवाद, और जयहिंद. (तालियां). और भारत तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच साझेदारी जिंदाबाद. (तालियां).

समाप्त सायं 6:17 भारतीय समयानुसार